## फूलमती की कहानी

# अबला से सबला बनी

हेम भटनागर

फूलमती माथ्वाड़ गांव में रहती है। चार साल पहले फूलमती की शादी हुई थी। फूलमती के पति (आदमी) का नाम अमर सिंह है। शादी में फूलमती ने लाल साड़ी पहनी थी। उसकी मां ने चारों तरफ़ गोटा लगाया था। पल्ले पर किरण लगा दी थी।

फूलमती की सहेली थी रमा। रमा शहर में पढ़ने जाती थी। रमा से फूलमती को पता चला था कि शहर में लड़कियां ओंठों पर लाली लगाती हैं। लाली को लिप्सटिक कहते हैं। उससे लिप्सटिक ठीक से बोला भी नहीं जाता था। वह उसे लिपिसटिक कहती थी। रमा ने चुपके से उसके ओंठों पर लगा दी थी। फूलमती का रंग गोरा नहीं था। शादी के पहले सुहागिनों ने तेल चढ़ाया। उसके बाद हल्दी-आटा मिलाकर तेल में घोलकर उसके पैरों और हाथों में लगाया। उससे उसकी खाल खूब मुलायम हो गई और साफ भी हो गई। पैरों में पायल-बिछुए पहना कर महावर लगा दी थी। फूलमती सुंदर लग रही थी।

उसका दूल्हा अमर सिंह भी लाल पगड़ी बांध कर आया था ब्याहने। मौर भी बांध रखा था। शादी के बाद अमर सिंह को फूलमती खूब अच्छी लगी। वह उसे खूब प्यार से रखता। फूलमती के हाथ की रोटी भी उसे मीठी लगती। साल भर बीत गया। फूलमती के बच्चा होने के आसार नहीं दिखाई दिए। अमर सिंह कुछ झुंझलाने लगा। उसे

लगा—कहीं फूलमती को किसी ने बहका तो नहीं दिया, कुछ गोली-वोली दे दी हो। आजकल जहां देखो, यही बात होती रहती है कि बच्चा अभी नहीं। अमर सिंह तो चौबीस साल का हो गया और फूलमती भी बच्ची तो नहीं। सोलह के तो ऊपर ही होगी। अठारह साल की ही होगी।

खेत से लौट कर आता तो अमर सिंह चुप होकर बैठ जाता। चिल्लाकर फूलमती को पुकारता नहीं था। फूलमती चिलम पकड़ा देती तो पी लेता। नहीं देती तो मांगता नहीं। रात होने लगती तो फूलमती दाल-रोटी बनाती। थाली आगे रखती तो खा लेता। यह भी नहीं कहता कि 'फूलमती! तू भी खा, तब खाऊंगा।' फूलमती को बहुत बुरा लगता। वह रोती रहती। कुछ कहने की हिम्मत नहीं होती।

अमर सिंह ने एक दिन कहा—'देख फूलो! मुझे बच्चा चाहिए। तू अपनी सहेली के साथ डाक्टरनी के पास चली जा।'

डाक्टरनी ने जांच की, तो उसने कहा—'तुम्हारा एक छोटा-सा ऑपरेशन करेंगे, उसके बाद तुम्हारे बच्चा होगा।'

फूलमती ऑपरेशन के नाम से ही डर गई। उसने कहा—'मैं नहीं कराऊंगी।' अमर सिंह ने ज़िद की। कहा—"करा ले, तभी बच्चा होगा। तुझे बच्चा नहीं चाहिए क्या?"

फूलमती सुनकर चुप रही। उसे बड़ा डर लग रहा था। वह सोचती—'अगर मैं डाक्टर के पास गई तो वह काट-पीट कर देगी और मैं मर जाऊंगी।"

अमर सिंह को यह बात बिलकुल अच्छी नहीं लगती थी। फूलमती डाक्टर के पास भी नहीं जाती। उसे फूलमती पर गुस्सा आने लगा। वह रात को घर आता तो कोई न कोई बहाना बनाता और फूलमती को मारता। शराब पीने की तो आदत उसकी थी ही। अब वह और भी देर तक शराब पी कर घर आता। रोज़-रोज़ किसी न किसी बात को लेकर फूलमती से झगड़ा करने लगा।

फूलमती हर समय दुखी रहती। रोती रहती। उसे दुख था कि 'बच्चा न होने की वजह से मेरे आदमी का मन फिर गया। मैं क्या करूं?'

आखिर, उसने अपनी सहेली से कहा—'चल, मैं ऑपरेशन करा लेती हूं।'

अमर सिंह खुशी-खुशी अस्पताल ले गया। कुछ दिनों बाद फूलमती ठीक हो गई, पर छः महीने हो गए, वह गर्भवती नहीं हुई।

उन्हीं दिनों खेत पर जाते-आते अमर सिंह ने शांति को देखा। शांति अमर से बहुत छोटी थी। अमर सिंह छेड़-छाड़ करता और प्यार की बातें करता तो वह हंसती रहती। शुरू में जब अमर सिंह उससे मिलता तो उसके बालों पर हाथ फेरता, फिर गालों पर हाथ फेरता। यह सब उसे अच्छा लगता। उसकी बातों में शांति को रस आता। उसके साथ बैठने-उठने में उसे अच्छा लगता।

एक दिन अमर सिंह शांति को अपने घर ले आया। फूलमती से बोला—'अब यह यहीं रहेगी।'

फूलमती को अच्छा नहीं लगा। उसने कहा—'कैसे रहेगी यहां? यहां तो मैं रहूंगी। मैं तेरी ब्याहता हूं।'

पर अमर सिंह ने कड़क कर कहा—'मैं जो कह रहा हूं—सुन ले। यह यहीं रहेगी। तू इसको अच्छी तरह रख।' और अपने काम पर चला गया।

फूलमती ने शांति से कहा—'तू चली जा यहां से। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं।' फूलमती ने लड़ाई कर के शांति को भगा दिया। शांति का बाप तो था नहीं। मां परेशान थी कि अमर सिंह शांति को ब्याह कर ले जाए तभी अच्छा है। ऐसे ही घर बिठाने से गांव वाले तंग करेंगे।

अमर सिंह की एक कठिनाई थी। उसे गांव का मुखिया चुना गया था। अगर मुखिया ही गलत करने लगे तो गांव के लोगों को ठीक राह कैसे दिखाएगा?

इधर शांति को बार-बार घर लाता। फूलमती उसे मारती-पीटती और उसे भगा देती। अमर सिंह भी अपना गुस्सा फूलमती को पीटकर निकाल लेता, पर कोई उपाय नहीं सूझता था।

फूलमती ने गांव के बड़े लोगों से कहना शुरू किया। फूलमती के दुख को सुनकर सभी को अमर सिंह पर गुस्सा आता। अमर सिंह ने घर पर आना ही छोड़ दिया। दस-दस दिन तक वह घर पर नहीं आता। फूलमती ने सुना कि वह शांति

को लेकर कहीं और रहने लगा है।

जब अमर सिंह घर आता तो सारे गांव के लोग घेर कर उसे समझाना शुरू करते, पर उसके कुछ समझ में नहीं आता।

आखिर में एक दिन पंचायत बिठाई गई। पंचायत ने फैसला फूलमती के पक्ष में दिया। अगर अमर सिंह शांति के साथ रहना चाहता है तो वह उससे शादी करके रहे।फूलमती को रहने-खाने के लिए मासिक रुपया दे।

फूलमती ने समझ लिया कि अमर सिंह के साथ रहकर उसे किसी तरह का सुख तो नहीं मिल रहा था। अगर खाने-रहने का रुपया मिल जाए तो उसे कोई शिकायत नहीं।

उसने पंचायत का फैसला मान लिया, पर मन ही मन बहुत दुखी रहती थी। अकेले में बैठी रोती रहती। तभी गांव में एक मेला हुआ। मेले में शहर से कुछ लड़कियां आईं। वह बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ी हुई थीं। उन्होंने गांव की सारी औरतों को इकट्ठा कर के पढ़ाना शुरू किया, लिखना सिखाया। फूलमती को बुलाकर समझाया कि जीवन में कुछ गलत हो जाए तो उसके लिए रोते रहने से काम नहीं चलता। अपने आप काम सीखो। पढ़ना लिखना सीख कर अपनी जीविका चलाने की बात सोचो।

फूलमती की समझ में यह बात आ गई और वह थोड़े ही दिनों में किताबें पढ़ने लगी। सिलाई सीखकर गांव की औरतों के ब्लाउज़ और पेटीकोट सीने लगी। सखी-सहेलियों से मिलकर काम करने लगी।

फूलमती का सारा दिन घर के काम में, पढ़ने-पढ़ाने में निकल जाता, पर मन में एक हूक सी उठती कि 'मैं ब्याह करके भी कुंआरी बनी हूं।'

औरतों की कई पत्रिकाएं पढ़-पढ़ कर वह अपने को समझाने लगी थी। एक बार ब्याह करके जब दुख ही मिला तो अब अकेले ही जीवन में सुख ढूंढना चाहिए।

पढ़ने के कारण उसकी दोस्ती पढ़ी-लिखी औरतों से होने लगी। उनकी सलाह से उसने एक सिलाई की दुकान खोल ली। नाम रखा— 'फूलघर'। अपनी दुकान पर एक रजिस्टर रखा। उसमें जो कपड़े सिलवाने आता, उससे कहती 'अपना नाम, पता लिख कर जाओ।' इसी तरह अंगूठा लगाने वालों को भी नाम-पता लिखना सीखना पड़ा।

इस प्रकार फूलमती अपने पर निर्भर रहने लगी। वह एक सबला स्त्री की तरह जीवन बिताने लगी।□

पढ़ाई-लिखाई सीखना सिर्फ 1 और 0 का खेल है। 1 और 0 के हेरफेर से क, ख से ले कर सारे अक्षर सीखे जा सकते हैं। गिनती और हिसाब भी 1 और 0 का ही खेल है।

जो औरतें कच्ची दाल कूट-पीस कर बढ़िया पापड़ बना सकती हैं, तीज-त्योहार पर दीवारों पर सुंदर चित्र बना सकती हैं, क्या वे अक्षर और गिनती नहीं सीख सकतीं।